प्रातः क्लास 12-3-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बेहद का बाप सभी बच्चों को समझाते हैं। सभी को यह पैगाम पहूंचाना है कि अब बाप आये हैं बाप धीर्य दे रहे हैं। क्योंकि भक्ति-मार्ग में बुलाते हैं। बाबा आओ। लिबरेट करो। दुःख से छूड़ाओ। तो बाप धीर्य देते हैं बाकी थोड़ा रोज है। कोई की बिमारी छूटने पर होती है तो कहते हैं अभी ठीक हो जावेंगे। बच्चे भी समझते हैं इस छी2 दुनिया में बाकी हम थोड़े रोज हैं। फिर हम नई दुनिया में जावेंगे। इसके लिए हमको लायक बनना है। फिर कोई भी रोग आदि तुमको नहीं सतावेंगे। बाप धीर्य देते हैं। और कहते हैं थोड़ी मेहनत करो। और कोई मनुष्य नहीं जो ऐसे धीर्य दे। तुम सतोप्रधान थे अभी तमोप्रधान हो गये हो। सारा झाड़, सभी मनुष्य सतमोप्रधान है। अभी बाप आये हैं सतोप्रधान बनाने। सभी आत्मायें पवित्र बन जावेंगी। कोई योगबल से कोई सजाबल से। सजा भी बल है ना। सजाओं से जो पवित्र बनेंगे उनका पद कम हो जावेगा। तुम बच्चों को तो श्रीमत मिलती रहती है। कदम2 पर श्रीमत मिलती है। बाप कहते हैं मामेकं याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जावेंगे। अगर याद न करेंगे तो पाप सोणा बन जावेंगे। क्योंकि पापात्मा बन तुम मेरी निन्दा कराते हो। मनुष्य कहेंगे इनको ईश्वर श्रीमत देते हैं जो आसुरी बलन दिखाते रहते हैं। लाचारी भी होती है ना। बच्चे हार भी खाते हैं। अच्छे2 बच्चे भी हार खाते हैं तो पाप कटते ही नहीं। फिर भूलना भी पड़ता है। यह बहुत छी2 दुनिया है। इसमें सब कुछ होता रहता है। बाप को बुलाते ही हैं आकर बाबा हमको भविष्य नई दुनिया के लिए रास्ता बताओ। बाप जानते तो हैं ना। उस तरफ है पुरानी दुनिया इस तरफ है नई दुनिया। तुम हो सेना। अभी तुम पुरुषोत्तम बनने लिए चल रहे हो। तुम्हारा उस पुरानी दुनिया से लंगर उठ गया है। तुम जहां जा रहे हो उस डिस्टीनेशन को ही याद करना है। बाप ने कहा है मेरे को याद करने से तुम्हारे कट उतरेंगे। या तो योगबल से या तो सजाएं। हरेक आत्मा प्युर तो जरूर बननी है। प्युर बनने बिगर वापस जा न सके। सभी को अपना2 पार्ट मिला हुआ है। बाप कहते हैं अभी यह तुम्हारा अन्तिम जन्म है। मनुष्य कहते हैं कलियुग तो अजन्म छोटा बच्चा है। गोया मनुष्य अजन्म इससे भी दुःखी होंगे। तुम संगमयुगी ब्राह्मण सभ्यसे हो। यह दुःखधाम तो अभी खत्म हो ना है। बाप धीर्य देते हैं। कल्प पहले भी बाप ने कहा था मामेकं याद करो तो तुम्हारे पापों के कट उतर जावेंगे। यह मैं गेरन्टी करता हूं। यह भी समझाते हैं कलियुग का विनाश होना है। सतयुग आना है जरूर। यह भी खातरी मिलती है। बच्चों को निश्चय भी परन्तु यहां न ठहरने कारण भूल जाते हैं। कोई न कोई विकर्म कर देते हैं। कहते हैं बाबा क्रोध आ जाता है। इसको भी भूत कहा जाता है। 5 भूत दुःख देते हैं। इस पुराने रावण राज्य में इस बिचारे का हिसाब-किताब भी चुकतु करना है। जिनको आगे कब काम विकार नहीं सताता था उनको भी इमर्ज हो जाती है बिमारी। कहते हैं आगे तो कब ऐसे विकल्प नहीं आये, अभी क्यों सताता है। यह ज्ञान है ना। ज्ञान सारी बिमारी को बाहर निकालती है। भक्ति सारी बिमारी को नहीं निकालती है। यह है ही अशुध विकारी दुनिया। 100% अशुधता है। पतित हैं ना। 100% पतित से फिर 100% पावन बनना होता है। 100% पतित भ्रष्टाचारी से 100% पावन श्रेष्ठाचारी बनना है। बाप कहते हैं मैं आया हूं तुम बच्चों को शान्तिधाम सुखधाम ले जाने। तुम सिर्फ मुझे याद करो और सृष्टि चक्र को फिराओ। कोई भी विकर्म न करो। जो गुण इन देवताओं में हैं ऐसी गुण धारण करनी है। बाबा कोई तकलीफ भी नहीं देते हैं। कोई2 घरों में भी इवील स्पिरिट सोल होते हैं। तो आग लगाये देते। पत्थर मारते हैं। नुकसान करते हैं। मनुष्य हो सभी इवील है ना। दुश्मनी होती है तो फिर स्थूल में भी कर्म भोग होता है। आत्मा एक दो को दुःख देती है शरीर द्वारा। शरीर न है तो भी दुःख देते हैं। बच्चों ने देखा है घोस्ट जिसको कहते हैं। वह सफेद छाया माफिक देखने में आता है। यह होता है उनका कुछ ख्याल नहीं करना होता है। तुम जितना बाप को याद करेंगे उतना सब खत्म होता जावेगा। यह भी हिसाब-किताब है ना। घर में बच्चियां कहती हैं हम पवित्र रहना चाहते हैं। आत्मा कहती है ना। और इवील सोल (अर्थात जिन में ज्ञान नहीं है) कहते हैं पवित्र न बनो। फिर झगड़ा हो पड़ता है।

कितना हंगामा होता है। अभी तुम पवित्र आत्मा बन रहे हो। वह हैं अपवित्र तो कितना दुःख देते हैं। मार मार कर हड्डियां तोड़ देते हैं। है तो आत्मा ना। उनको कहा जाता है इवील आत्मा। तमोप्रधान है ना। शरीर से भी तो बिगर शरीर भी दुःख देते हैं। ज्ञान तो है सहज। स्वदर्शनचक्रधारी बनना है। बाकी मुख्य है पवित्रता की बात। इसके लिए बाप को कुछ बहुत याद करना है प्यार से। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। रावण का इवील कहेंगे। इस समय यह दुनिया ही इवील है। एक दो से अनेक प्रकार के दुःख पाते ही रहते हैं। सभी की दवाई है एक। बाप कहते हैं मन्मनाभव। इवील आत्मा अनेक प्रकार के दुःख उठाती रहती है। इवील पतित को कहा जाता है। पतित आत्मा में भी 5 विकार अनेक प्रकार के होते हैं। कोई में बिकार की आदत कोई में गुसे की, कोई में तंग करने की आदत, कोई में नुकसान करने की आदत होती है। कोई में विकार की आदत होती है तोसताते हैं। विकार न मिलने से क्रोध में आकर मारते भी हैं। यह दुनिया ही ऐसी है। तो बाप आकर धीय देते हैं। हे आत्माएं, बच्चों धीय धरो मुझे याद करते रहो और दैवीगुण धारण करो। ऐसे भी नहीं कहते कि धंधा आद न करो। वा रिश्वत न लो। वा किसको मारो नहीं। जैसे मिलिट्री वालों को मारना पड़ता है। तो उन्हों को भी कहा जाता है तो उन्हों को भी कहा जाता है शिव बाबा को याद कर गोली चलाओ। गीता के अक्षरों को उठाये वह समझते हैं हम युध के मैदान में मरेंगे तो स्वर्ग में जावेंगे। इसलिए खुशी से लड़ाई में जाते हैं। परन्तु वह तो बात ही हवंनहीं है। आत्मा लड़ाई का संस्कार ले जाती है। तो उनका फिर लड़ाई में ही आना है। स्वर्ग में तो कोई जाता ही नहीं। अभी बाप कहते हैं तुम स्वर्ग में जा सकते हो। सिर्फ शिवबाबा को याद करो। याद एक शिव बाबा को ही करना है। तो स्वर्ग में जरूर जावेंगे। पतित बन कर फिर आवेंगे जरूर। बाप रहमदिल तो है ना। बाप समझाते हैं कोई भी विकर्म न करो। तो तुम विकर्माजीत बनेंगे। यह ल०ना० विकर्माजीत है ना। फिर रावण राज्य में विकर्मी राजा बन जाते हैं। विक्रम सम्वत होता है ना। मनुष्यों को तो कुछ भी पता नहीं है। तुम बच्चें अभी जानते हो यह ल०ना० विकर्माजीत राजा बने हैं। कहेंगे विकर्माजीत नम्बरवन फिर 2500 बर्ष बाद विक्रम सम्वत शुरू होता है। मोहजीत राजा की भी कहानी है ना। बाप कहते हैं नष्टोमोहा बनो। मामेकं याद करो तो पाप कटेंगे। जो 2500 बर्ष में पाप हुये हैं वह 50 बर्ष में तुम भस्म कर सतोप्रधान बन सकते हो। अगर योगबल न होगा तो फिर नम्बर पीछे हो जावेगा। माला तो बहुत बड़ी है। भारत भक्ति की माला तो साफ है जिस पर ही सारा खेल बना हुआ है। इसमें मुख्य है याद की बात। और कोई तकलीफ नहीं। भक्तिमार्ग में तो अनेक देवताओं साथ बुधि योग लगाते हैं। वह सभी हैं रचना। उनकी याद से कोई कल्याण नहीं होगा। बाप कहते हैं किसको भी याद न करो। मामेकं याद करो। जैसे भक्ति-मार्ग में पहले तुम सिर्फ मेरी भक्ति करते थे। अभी पिछाड़ी में भी तुम मुझे याद करो। बाप कितना क्लोयर समझाते हैं। आगे थोड़े ही तुम जानते थे। अभी तुमको ज्ञान मिला है। बाप कहते हैं और संग बुधि का योग तोड़ मामेकं याद करो तो योग अग्नि से तुम्हारे विकर्म भस्म हो जावेंगे। पाप तो बहुत करते आये हो। काम कटारी चलाते हो दो को दुःख देते आये हो। मूल बात है ही काम कटारी को। यह भी ड्रामा है। ऐसे भी नहीं कहेंगे यह ड्रामा बनाया। ऐसे ही क्यों। यह तो अनादी खेल है। इसमें मेरा भी पार्ट है। ड्रामा कब बना कब पूरा हुआ। आत्मा की जो प्लेट है वह कब घीसती नहीं। आत्मा अविनाशी है। उनमें पार्ट भी अविनाशी भरा हुआ है। ड्रामा भी अविनाशी कहा जाता है। बाप तो पुनर्जन्म में नहीं आते हैं वही आकर सभी राज़ समझाते हैं। सृष्टि के आदि मध्य अन्त का राज़ और कोई बता न सके। न बाप का आक्युपेशन न आत्मा का कुछ भी नहीं जानते हैं। यह सृष्टि का चक्र फिरता रहता है। अभी पुरुषोत्तम संगम युग है। जब सभी मनुष्य मात्र पतित पुरुष बन जाते हैं। शान्तिधाम में भी आत्माएं सभी पावत्र उत्तम बन जाती है। शान्तिधाम पावन है नई दुनिया भी पावत्र है। वहां शान्ति तो है ही। फिर शरीर मिलनेसे पार्ट बजाते हैं। यह हम जानते

हैं हरेक को पार्ट मिला हुआ है। वह तो हमारा घर है। शान्तिधाम में रहते हैं। यहां तो पार्ट बजाना है। अभी बापकहते हैं भक्ति-मार्ग में तुम ने मेरी अव्यभिचारी पूजा की। दुःखी नहीं थे। अभी व्यभिचारी भक्ति में आने से तुम दुःखी बने हो। अभी बाप कहते हैं देवीगुण धारण करो। फिर भी आसुरी गुण क्यों? बाप को बुलाया है हमको पावन बनाओ तो फिर पतित क्यों बनते हो। इसमें भी खास काम को तो जरूजीतना है। तो तुम जगत-जीत बनेंगे। यह किसको भी पता नहीं है कि अभी रामराज्य नहीं है। अभीतुम समझाते हो तो गालीदेते हैं। आत्मा शरीर द्वारा गाली देगी। इवील सोल हैं ना। इवील सोल प्युर सोल को माथा टेकते हैं। उनके लिए कहते हैं पुजारी। वह परमात्मा के लिए कहते हैं/
आप ही पूज्य आप ही पुजारी। गोया उनको भी नीचे ले जाते हैं। बाबा को कहते हैं आप को सोल प्युर भी है तो इवील भी है। बाप के लिए ऐसा कहना यह तो पाप हो गया। ऐसे पाप करते2 महाविकारी दुनिया बन जाती है। गरुड़पुराण में भी रौरव नर्क कहते हैं। जहां बिच्छू टिन्डन सर्प काटते रहते हैं। शास्त्रों में क्या बैठ दिखाया है। मनुष्य तो कुछ भी समझते नहीं। किसको आसुरी बुधि कहो तोबिगर जाते हैं। बिलकुल जैसे कि ईडियट बन्दर बुधि हैं। बन्दर सेना भी दिखाते हैं ना। बन्दरसेना ली रावण को भगाने लिए। तुम समझते हो हम सेना हैं। यह रावण राज्य को खत्म कर देते हैं। तुम्हारा यह नाम क्यों रखा है क्योंकि भल सुरत मनुष्य की है सीरत बन्दर की हो गई है। तुमखुद भी जानते हो हम बन्दर से भी बदतर थे। अभी बाप हमको ऐसा ऊंच बनाते हैं यह भी बाप ने समझाया है यह शास्त्र आद सब भक्ति मार्ग के हैं। इन से कोई भी मेरे साथ नहीं मिलेंगे। यह शास्त्रआद पढ़ते2 तमोप्रधान बन जाते हैं। इसलिए मुझे बुलाते हैं। आकर पावनबनाओ। तो पतित ठहरे ना। अब इसलिए बाबासालोगन भी बनाते रहते हैं। मैं अपने से पूछें कि हम कहां के निवासी हैं। मनुष्यों की तो बुधि ऐसी है जो कुछ भी समझते नहीं। निश्चयबुधि तो विजयन्ती हो जाते। रावण पर विजय पा कर रामराज्य में आ जाते हैं। बाप कहते हैं मुख्य है काम=पर जीत पाना। इस पर ही कितना हंगमा होता है। गाते भी हैं अमृत छोड़ विष क्यों खाते हो। अमृत नाम सुन वह समझते हैं गऊमुख से अमृत निकलता है। अरे गंगा व जल को थोड़े ही अमृत जल कहा जाता है। बाकी गऊमुख आद कुछ है थोड़े ही। स्त्री तो पति को भी ईश्वर समझती। उनके चरण धोकर उसको अमृत समझ कर पीती है। अगर अमृत है तो हीरे समान बने ना। यह तो बाप ज्ञान देते हैं। जिस से तुम हीरे समान बनते हो। पानी का नाम कितना वाला कर दिया है। तुम ब्राह्मणों को किसको भी पता नहीं है। वह कोड़ पाण्डव कहते हैं परन्तु पाण्डव को ब्राह्मण थोड़े ही समझते हैं। गीता में ऐसे अक्षर है नहीं जो पाण्डव को ब्राह्मण समझें। बाप बैठ सभी जो भी वेद-शास्त्र-आद हैं सब का सार समझाते हैं। बच्चों को कहते हैं शास्त्रों में जो कुछ पढ़ा है और जो हम सुनाते हैं जज करो। तुम समझते हो आगे हम सभीरांग सुनते थे। अनराईटियस थे। अभी अनराईटियास से राईटियस बनते रहते रहते हैं। फिर 21 जन्म राईटियस रहेंगे। रांग सुनने से 63 जन्म रांग रहते हैं। दुनिया ही राईटियस और अनराईटियास है। राईटियस राम बनाते हैं- अनराईटियस रावण बनाती है। बाप ने समझाया है तुम सब सीताएं अथवा भक्तियां हो। भक्ति का फलदेने वाला है राम। भगवान। कहते हैं मैं आता ही हूं फल देने। तुम जानते हो हम स्वर्ग में सुख भोगेंगे। बाकी सभी शान्तिधाम में रहते हैं। शान्ति तो मिलती है ना। वहां विश्व में सुख-शान्ति-पवित्रता सब है। शान्तिधाम में सिर्फ शान्ति ही है। सुखधाम में शान्ति भी तो सुख भी है। सभी कहते रहते हैं विश्व में शान्ति हो। तुम प्रदर्शनी में भी दिखाते हो इनके राज्य में विश्व में सुख-शान्ति सब था। विश्व में शान्ति थी तब तो मांगते हैं ना। जब एक धर्म था तो विश्व में शान्ति थी। तुम कितना समझाते हो फिर भी समझते नहीं। लिखते हैं 5-10 आते हैं। उन में भी कोई ठहरते हैं कोई नहीं ठहरते हैं। बाप कहते हैं पिछाड़ी में आवेंगे। तुम हार्ट-फेल मत हो जाओ। एक ही हट्टी है। कहां जावेंगे। कोई2 दुकानदार होते हैं ना एक बात पर ही रहते हैं। एक ही दाम। फर्स्ट क्लास चीजें मिलेंगी। यह शिव बाबा की हट्टी है। वह तो है निराकार। ब्रह्मा

भी जरूर चाहिए ना। तुम कहलाते भी हो ब्रह्मा कुमार और कुमारियां। शिव कुमारियां तो नहीं कहला सकते। ब्राह्मण बनने बिगर देवता कैसे बन सकते हैं। बहुत हैं जो ब्रह्मा को ही नहीं मानते। डायरेक्ट शिव बाबा से लेने चाहते हैं। मिलता कुछ भी नहीं। बहुत है जो ब्रह्मा को नहीं मानते। कहते हैं हम तो शिव बाबा को ही याद करते हैं। छोड़ो ब्रह्माको। ऐसे भी है जो ब्रह्मा को नहीं मानते। वह हुआ शूद्र। शूद्र से तो संग भी नहीं। बात भी नहीं करनी चाहिए। इवील है ना। समझते हैं हमको डायरेक्ट शिव से मिलता है। मिलेगा कुछ नहीं। यह पुरुषोत्तम सुगम युग है हो ब्राह्मण कुल का। ब्राह्मण नहीं कहलावेंगे तो गोया शूद्र ही ठहरे। ब्राह्मण और शूद्र आपस में मिल न सके। वह हंस, वह बगुला। ब्राह्मण कुल में ही न आया तो हंस बन कैसे सकेंगे। कुछ भी समझते नहीं। भूले हुये हैं। देह-अभिमानी है। सिखलाने वाले टीचर बिगर देही अभिमानी बन न सके। तकदीर में न है तो फिर ऐसे2 उल्टी ख़यालात आते हैं। ब्रह्मा से पढ़ेंगे नहीं, पत्र न लिखेंगे। ब्रह्मा×से×न×प्रीत ब्रह्मा से न पड़ती है तो शिव के भी उन से नहीं पड़ेंगी। शिवाबाबाक हेंगे मेरे बच्चे न पड़ती है तो मैं फिर क्या करूंगा। ब्रह्मा को न मानने वाले बर्थनाट अपनी है। ब्रह्मा का बन फिर उन से कनेक्शन न रखते हैं तो गोया ट्रेटर हो गये। यह बहुत समझने की बातें हैं। न समझने से मुंझ जाते हैं। ब्राह्मण कुल तो चाहिए ना। शूद्र से सीधा देवता कैसे बनेंगे। ब्राह्मणकुल तो जरूर चाहिए। ब्राह्मणों का ही हीरे जैसा जीवन है। ब्रह्मा का बच्चा अपने को न समझा तो हीरे जैसा थोड़े ही बन सकेंगे। ब्राह्मणों को ऊंच पद पाना है तो ब्रह्मा को पहले मानना पड़े। बाबा खुद कहते हैं ब्रह्मा द्वारा कि मामेकं याद करो। परन्तु ब्राह्मण कुल तो जरूर चाहिए ना। ब्राह्मण साथ कनेक्शन नहीं तो बाकी क्या रहा। किसके साथ कनेक्शन नहीं उनको कहा जावेगा निधणका। ब्रह्मा मुंह देखे तो शिव का भी मुंह देखे। ऐसे भी चर्ये खर्ये होते हैं। किसको ज्ञान भी देते होंगे तो उनको तीर नहीं लगता होगा। बाप हर तरह से समझाते रहते हैं। कोई भी भूल न हो। चढ़ाई बहुत ऊंच है। पांव खिसक गया तो खत्म। विकार में गया तो गोया ऊपर से नीचे गिरा। देहाभिमान के पीछे ही और सब विकार आते हैं। पहले है देहाभिमानी। फिर काम क्रोध ..... देहाभिमान होनेसे ही विकार सताते हैं। देही-अभिमानी हो तो सता न सके। मंजिल है। देह-अभिमानी को ही भूत सताते हैं। तो टीचर जो पढ़ाते हैं उनको कितना मान देना चाहिए। याद करना चाहिए। तब ही बाप कहते हैं भल काम-काज करो। गृहस्थ व्यवहार में रहते यह पढ़ाई पढ़ो। कोई2 शादी के बाद भी पढ़ते हैं। तुम भी गृहस्थ व्यवहार में रहते पढ़ते हो ना। बेहद का बाप पढ़ाते हैं तो कितना अच्छी पढ़ना चाहिए। कोई2 समय बहुत अच्छी गुह्य2 पाईन्ट निकलती है पढ़ते नहीं है तो फिर धारणा नहीं होती। कच्चे पड़ जावेंगे। बहुत कच्चे पर जाते हैं। धारणा ही नहीं होती। विकार में फेंसे हुये हैं। देहाभिमान के साथ ही और सब आते हैं। इसलिए बाप कहते हैं देहीअभिमानी बनो। तुम संगे आये थे फिर सतयुग में तुम्हारा पवित्र सम्बन्ध रहा। अभी है अशुध सम्बन्ध। फिर बाप को याद करना है। कितना सहज है इसका नाम ही है सहज योग सहज ज्ञान। अर्थात सहज पढ़ाई और सहज याद। बेहद का बाप बेहद का सुख देंगे तो क्यों नहीं उनको याद करेंगे। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। फिर भी विकारों में गिर पड़ते हैं। क्रोध में आ जाते हैं। लोभ में आ जाते हैं। अच्छा×बच्चों×को×अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग और नमस्ते।

नोटिफिकेशन:-
******** खास ब्राह्मणियों प्रति,

मधुबन में पार्टी ले आने के पहले हरेक स्टुडेन्ट का निश्चय पत्र भेजना है। छुट्टी मिलने पर वह आ सकते हैं। बच्चों को भी बिगर छुट्टी नहीं लाना है। *

** *

-: : ओमशान्ति: :-